नेथ्रन की कहानी

नेथ्रन जीता, सीखता, बढ़ता एवं सभी के साथ खेलता है

बधिरांधता पर जागरूकता सामग्री

**श्रीमती एल.वी. जयश्री निदेशक, एसपीएएसटीएन के द्वारा बधिरांधता पर कॉमिक पुस्तक की संकल्पना**

**श्रीमती के. सनम नायर, आरएलसी समन्वयक, एसपीएएसटीएन: द्वारा विकसित किया गया**

हम इस जागरूकता सामग्री को, जो एक कॉमिक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत की गई है, मुख्यधारा के विध्यालयी कार्यक्रम के शिक्षकों को संवेदनशील बनाने के लिए समर्पित करते हैं, जिससे बधिरांधता बच्चों को मुख्यधारा के विद्यालयी शिक्षा में शामिल करने के लिए कुछ त्वरित उपाय प्रदान किए जा सकें।

**स्पास्टिक्स** सोसाइटी ऑफ तमिलनाडु (एसपीएएसटीएन), बधिरांधता क्षेत्रीय शिक्षण केंद्र के लिए, सामग्री विकास में सहयोग, प्रतिक्रिया एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए सेंस इंटरनेशनल इंडिया का हार्दिक धन्यवाद करता है।

अनुदानदाता:
अज़ीम प्रेमजी फिलान्थ्रॉपिक इनिशिएटिव्स

सेंस इंटरनेशनल इंडिया

पयपाल

श्रीमती उमायल पलानीअप्पन और परिवार

द स्पास्टिक्स सोसाइटी ऑफ़ तमिलनाडु

 (एसपीएएसटीएन)

बधिरांधा के लिए दक्षिण क्षेत्रीय शिक्षण केंद्र (आर.एल.सी.)

द स्पास्टिक्स सोसाइटी ऑफ़ तमिलनाडु (SPASTN)

सीएसआईआर रोड, तारामणि, चेन्नई - ६०० ११३

फोन: २२५४१६५१, २२५४१५४२ | फैक्स: २२५४१०४७

ईमेल: thespasticssocietyoftamilnadu@gmail.com

spastnrlc@gmail.com | वेबसाइट: www.spastn.org

कुमार एक सब्ज़ी विक्रेता हैं और उनकी पत्नी घरेलू सहायिका के रूप में काम करती हैं। उनके दो बच्चे हैं — पूजा और नेथ्रन। पूजा उनकी बड़ी बेटी है जिसकी उम्र 11 साल है और नेथ्रन उनका बेटा है जिसकी उम्र लगभग 9 साल है। नेथ्रन को एक विशेष विद्यालय द्वारा बधिरांधता से ग्रसित बालक के रूप में पहचाना गया था। कुमार चाहते थे कि उनके दोनों बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करें। दोनों बच्चे सर्व शिक्षा अभियान (SSA) विद्यालय में पढ़ते हैं। आइए जानते हैं नेथ्रन की प्रेरणादायक कहानी और किस तरह उसने सीमित दृष्टि और सुनने की क्षमता के बावजूद शिक्षा पाने की ठानी।

**दृश्य की शुरुआत होती है — सर्व शिक्षा अभियान विद्यालय में**

**पूजा:** हाय संतरा, यह मेरा भाई नेथ्रन है।

**नेथ्रन:** हाय संतरा, आपसे मिलकर अच्छा लगा!

**संतरा:** मुझे भी नेथ्रन। हमारे स्कूल में आपका स्वागत है।

**नेथ्रन:** धन्यवाद संतरा!

**नेथ्रन:** ठीक है लड़कियों, आप लोग बात करते रहो, मैं अपनी कक्षा में जा रहा हूँ।

**आरती मैडम:** हाय पूजा और संतरा… नेथ्रन कहाँ है? क्या वह आज स्कूल आया है? मुझे वह आज स्कूल में नहीं दिखा!

**पूजा:** सुप्रभात आरती मैडम! हाँ मैम, वह आया है। वह कभी स्कूल मिस नहीं करता। शायद वह कक्षा में है।

**संतरा:** सुप्रभात मैम!

**आरती मैडम:** सुप्रभात बच्चियों! कक्षा में मिलते हैं।

**छात्र 1 (विकलांगता से ग्रसित बच्चा):** हाय पूजा! मैंने अभी देखा कि नेथ्रन बिना किसी मदद के लाइब्रेरी से अपनी कक्षा पहुँच गया। वह स्कूल और गतिविधि क्षेत्र की दिशा से अच्छी तरह परिचित है, इसलिए स्वतंत्र रूप से चलता है। यह देख कर बहुत अच्छा लगता है!

**संतरा:** वह चीज़ों को कैसे पहचानता और समझता है? यह तो करोड़ों का सवाल है, जिसे मैं जानने के लिए उत्सुक हूँ।

**पूजा:** क्या आप सब जानना चाहेंगे कि नेथ्रन स्कूल, खेल के मैदान, बाहर और घर पर हमारे साथ कैसे घुलता-मिलता है? कुछ हफ्तों तक मैंने उसे स्कूल और इसके कार्यक्षेत्र जैसे कक्षा, भोजन कक्ष, पुस्तकालय, खेल क्षेत्र, असेंबली आदि का परिचय दिया ताकि वह स्वतंत्र रूप से चल सके।

**पूजा:** सहायक उपकरण ठीक वैसे हैं जैसे हमारे कुछ दोस्त चश्मा पहनते हैं। ये उपकरण विकलांग व्यक्तियों को आसानी से काम करने में मदद करते हैं। मैंने कुछ चित्र बोर्ड पर बनाए हैं जो विशेष रूप से दृष्टिहीन, श्रवण बाधित या बधिरांध बच्चों द्वारा उपयोग किए जाते हैं।

**(बोर्ड पर सहायक उपकरण के चित्र बनाए गए हैं):**

* चश्मा
* श्रवण यंत्र
* छड़ी
* आवर्धक कांच
* ब्रेल

**संतरा:** हम्म! बहुत रोचक! तो नेथ्रन चश्मा, श्रवण यंत्र और छड़ी जैसे सहायक उपकरणों का उपयोग करता है… क्या मैं सही हूँ पूजा?

**छात्र 1:** मेरी बैसाखियाँ और व्हीलचेयर भी सहायक उपकरण हैं।

**पूजा:** आओ, मैं तुम्हें नेथ्रन की कक्षा दिखाती हूँ।

**नेथ्रन:** हाय! पूजा दीदीा!

**(नेथ्रन पूजा के झुमकों को छूता है।)**

**पूजा:** हे संतरा, क्या तुमने ध्यान दिया? नेथ्रन ने मुझे मेरे झुमकों से पहचाना — ये उसके लिए एक स्पर्श संकेत या वस्तु संकेतक है जिससे वह मुझे पहचानता है। हर व्यक्ति का एक नाम संकेत होता है। जब उसने मेरे झुमके पहचाने, तो उसने मेरे नाम का संकेत किया। वह अपने दैनिक जीवन में कई स्पर्श आधारित वस्तुओं का उपयोग करता है।

**संतरा:** हम्म…

**आरती मैडम:** संतरा! मेरे चूड़ियाँ उसकी पहचान की वस्तु हैं। नेथ्रन अपने सहपाठियों की कुर्सियों को पहचानने में भी स्पर्श संकेतों का उपयोग करता है। अद्भुत है ना! मैं अपने बाकी छात्रों को नेथ्रन को देखकर सीखने को कहती हूँ। तुम भी ऐसा ही करो!

**पूजा:** संतरा! अब तुम बताओ कि नेथ्रन और कौन-कौन सी स्पर्श आधारित वस्तुओं का उपयोग करता है। चलो बाहर चलते हैं।

**संतरा:** बिल्कुल पूजा!

**(दरवाज़े पर एक नीला पेन हुक से बंधा हुआ है)**

**आरती मैडम:** देखो इस दरवाज़े को — इस पर बंधा पेन उसकी कक्षा, उसके सहपाठी या थेरेपी रूम की पहचान के लिए उपयोग होता है। उसके सहपाठी यह सुनिश्चित करते हैं कि वे इन वस्तुओं का नियमित रूप से उपयोग करें ताकि नेथ्रन को कोई कठिनाई न हो। वह अपनी दिनचर्या के लिए एक कैलेंडर प्रणाली का भी उपयोग करता है।

**नेथ्रन:** हाँ मैम! यह एक अच्छा आइडिया है।

**पूजा:** तो संतरा! बताओ तुम्हारा स्पर्श संकेतक क्या होगा?

**संतरा:** म्म्म… मेरा तो शायद वो अंगूठी होगी जो मैं अपनी उंगली में पहनती हूँ…!

**पूजा:** वस्तु संकेतक एक प्रतीक प्रणाली का हिस्सा होते हैं जो बधिरांध बच्चों को यह पहचानने में मदद करते हैं कि वे कहाँ हैं या आगे क्या होने वाला है। जैसे – एक चम्मच से स्नैक/लंच टाइम, क्रेयॉन से पेंटिंग, और बॉल से आउटडोर एक्टिविटी का संकेत दिया जाता है।

**नेथ्रन:** हाँ पूजा, ये बात सच है। इससे नेथ्रन पहले से कम चिंतित और कम निर्भर महसूस करता है।

**संतरा:** आरती मैम ने जिस कैलेंडर सिस्टम की बात की थी वह क्या है? हम चलते हुए इसके बारे में बात कर सकते हैं!

**पूजा:** मैम, क्या आप संतरा को कैलेंडर सिस्टम के बारे में विस्तार से बताएँगी?

**आरती मैडम:** ज़रूर, मैं तुम्हें बताती हूँ संतरा…

**आरती मैडम:** सबसे पहले है "एंटिसिपेशन कैलेंडर" — इसका उपयोग उन गतिविधियों की समझ सिखाने के लिए किया जाता है जो निकट भविष्य या अभी-अभी बीती हों। इसमें सामान्यत: टोकरी या बॉक्स का उपयोग होता है। उदाहरण के लिए, "खाने का समय" दर्शाने के लिए चम्मच का उपयोग किया जाता है।

जब एक या दो नियमित गतिविधियाँ स्थान, ध्वनि, गंध या क्रिया से जुड़ती हैं, तो यह बच्चों की स्मृति में इनका संबंध बनाने में मदद करता है — जैसे वस्तु और गतिविधि, गंध और व्यक्ति इत्यादि। बच्चा वस्तु संकेतों के माध्यम से दिनचर्या की शुरुआत का अनुमान लगाने लगता है।

अगर बच्चा चम्मच को होंठों से लगते हुए ‘क्लक’ की आवाज़ को समझता है, तो वह भोजन की गतिविधि पहचानने लगता है। इस तरह से वह दिनचर्या की शुरुआत और अंत को समझने लगता है। जब गतिविधि समाप्त होती है, तो वह वस्तु ‘फिनिश बॉक्स’ में रखी जाती है, जिससे बच्चे को समझ आता है कि यह काम पूरा हो गया।

यह ‘प्रतिनिधित्व बनाने’ की पहली सीढ़ी है।

**संतरा:** क्या आप मुझे कैलेंडर प्रणाली के और उदाहरण दे सकती हैं?

**आरती मैडम:** "डेली कैलेंडर" का उपयोग मैं नेथ्रन के साथ कक्षा में करती हूँ। यह स्कूल के दौरान घटने वाली गतिविधियों को समयानुसार दर्शाता है। इससे बच्चे को यह पता चलता है कि सर्कल टाइम के बाद प्री-राइटिंग स्किल आती है। इससे नेथ्रन वस्तुओं, लोगों और गतिविधियों की बुनियादी शब्दावली सीखता है। उसका IEP (व्यक्तिगत शिक्षा योजना) भी इसी के ज़रिए किया जा सकता है।

अब नेथ्रन को समय की अच्छी समझ है, वह विकल्प चुन सकता है और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए वस्तुएं या लोग को दिखा सकता है। मैं अक्सर सेंस इंटरनेशनल इंडिया, हेलन केलर स्कूल फॉर डेफब्लाइंड, ओरेगन डेफब्लाइंड प्रोजेक्ट, और पर्किन्स पाथ्स टू लिटरेसी जैसी वेबसाइटों से सीखने के लिए विचार और विधियाँ लेती हूँ।

**आरती मैडम:** जल्द ही मैं “एक्सपैंडेड कैलेंडर” शुरू करूंगी, जब नेथ्रन इसके लिए तैयार होगा। इससे मैं उसके साथ सप्ताह के अनुसार होने वाली चीज़ों पर दैनिक बातचीत कर पाऊंगी। यह कैलेंडर सप्ताह, महीने या साल भर का भी हो सकता है। मैं उसे मौसम, त्योहारों और कपड़ों के बारे में बता पाऊंगी।

**संतरा:** अब मुझे समझ में आ गया कि बधिरांध बच्चे अपनी दैनिक और भविष्य की गतिविधियों की योजना कैसे बनाते हैं।

**आरती मैडम:** संतरा! कल्पना ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण होती है। सही कहा ना बच्चों? तो अब बताओ, बधिरांध बच्चे संवाद कैसे करते हैं? वस्तु संकेतक संवाद के उपकरण नहीं हैं, पर वे समय, गतिविधियों और आगे क्या होगा — इनका पूर्वानुमान बनाने में मदद करते हैं। मुझे लगता है पूजा इस बारे में बताएगी…

**संतरा:** एक दिन मैं बधिरांध बच्चों की शिक्षिका बनना चाहती हूँ।

**पूजा:** मुझे एक पद्धति के बारे में पता है जो नेथ्रन इस्तेमाल करता है — उसे "टैक्टाइल साइन लैंग्वेज" कहते हैं। चलो उस स्पेशल एजुकेटर से मिलते हैं जिन्होंने नेथ्रन को स्पेशल स्कूल में पढ़ाया था।

**पूजा:** नमस्ते मैडम! मेरी दोस्त जानना चाहती है कि बधिरांध लोग संवाद कैसे करते हैं। वह भी एक स्पेशल टीचर बनना चाहती है।

**संतरा:** नमस्ते मैडम!

**विशेष शिक्षक:** मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि तुम इतनी कम उम्र में विकलांगता के बारे में जानने में रुचि रखती हो। बधिरांध लोग कई तरह से संवाद करते हैं — यह उनकी दृष्टि और श्रवण हानि, पारिवारिक पृष्ठभूमि और शिक्षा पर निर्भर करता है।

* कुछ कम सुनने वाले या बधिर जो कम दृष्टि रखते हैं, वे “साइन लैंग्वेज” का उपयोग करते हैं।
* कभी-कभी कम दृष्टि वाले लोग साइन बेहतर तरीके से देख पाते हैं यदि साइन करने वाला हल्के रंग की त्वचा के साथ कंट्रास्ट में कपड़े पहने।
* नेथ्रन के साथ पढ़ने वाला एक लड़का था जिसे "एडाप्टिव साइन्स" पसंद थे — वह बहुत कम क्षेत्र में, छाती के पास संकेत करता था क्योंकि उसकी परिधीय दृष्टि सीमित थी।

**विशेष शिक्षक:** मेरी कक्षा में एक छात्र था जो दृष्टिहीन था और किशोरावस्था में उसकी श्रवण शक्ति भी धीरे-धीरे चली गई। उसने संकेत भाषा नहीं सीखी थी, इसलिए उसने “फिंगर स्पेलिंग” पसंद की। कुछ छात्र मेरे हाथों पर हाथ रखकर समझते हैं कि मैं क्या संवाद कर रही हूँ।

**विशेष शिक्षक:** कुछ बधिरांध व्यक्ति जिनकी दृष्टि बिलकुल नहीं होती, वे वक्ता की ठुड्डी पर हाथ रखते हैं और बाकी उंगलियाँ गाल पर — ताकि वे आवाज़ के कंपन और होंठों की गति को महसूस कर सकें। इसे "टाडोमा" कहा जाता है।

**विशेष शिक्षक:** क्या तुमने कक्षा 5 की सेल्वी को देखा है? वह अपने साथी के साथ “टैक्टाइल साइन लैंग्वेज” का उपयोग करती है — इसमें बधिरांध व्यक्ति अपने हाथ संकेत करने वाले के हाथ पर रखता है, ताकि वह संकेतों की गति, आकार और स्थान को महसूस कर सके।

**संतरा:** मैडम! कृपया बताइए कि नेथ्रन पढ़ेगा और लिखेगा कैसे?

**विशेष शिक्षक:** लगता है तुम्हारे अंदर एक जुनूनी शिक्षिका बनने की सारी योग्यताएँ हैं। जिन छात्रों की कुछ दृष्टि बची होती है, वे आवर्धक लेंस से पढ़ सकते हैं, बशर्ते हम उन्हें बड़े अक्षरों में सामग्री दें। लेकिन जिनकी दृष्टि नहीं होती, वे “ब्रेल” का उपयोग करते हैं — जो एक स्पर्श आधारित पढ़ने और लिखने की वैकल्पिक विधि है। मैं आमतौर पर ब्रेल की शुरुआत बचपन में करती हूँ, अगर बच्चा अपने दोनों हाथों और उंगलियों का उपयोग कर सकता हो।

ब्रेल में "छह बिंदु" होते हैं — उभरे हुए बिंदु जिनके ज़रिए पढ़ा और लिखा जाता है। इसके लिए एक विशेष स्टाइलस और ब्रेल टाइपराइटर (ब्रेलर) भी होता है।

**(ब्लैकबोर्ड पर ब्रेल वर्णमाला इंग्लिश में दर्शायी गई है)**

**संतरा:** धन्यवाद मैडम! आपने इतनी सारी चीजें समझाईं — यह बहुत दयालुता थी आपकी।

**पूजा:** धन्यवाद शिक्षकों का! मेरे भाई नेथ्रन जैसे कई बच्चे और अन्य बधिरांध विशेष ज़रूरतों वाले बच्चे नियमित स्कूलों और विशेष विद्यालयों दोनों में पढ़ रहे हैं।

**विशेष और सामान्य शिक्षा के बीच की दूरी को पार करना संभव है — हमारे स्कूल की शिक्षकों की वजह से। हम सब एक साथ जी सकते हैं, सीख सकते हैं, खेल सकते हैं, और बढ़ सकते हैं!!**

संक्षिप्त सूचना

* बधिरांधता एक विशिष्ट विकलांगता है, जिसमें सुनने एवं देखने की क्षमता अलग-अलग स्तरों तक प्रभावित होती है।
* अनुमान लगाया जाता है कि भारत के दक्षिणी क्षेत्र में १००,५०० से अधिक लोग बधिरांधता/बहु-संवेदी अक्षमता (एमएसआई) से प्रभावित हैं, जिनमें से केवल ९,६०० को किसी न किसी प्रकार की शिक्षा एवं पुनर्वास सेवाएँ प्राप्त हो रही हैं। बहुत बड़ी संख्या में बधिरांधजन अभी भी हमारी पहुँच से बाहर हैं एवं उन्हें हमारी सेवाओं की आवश्यकता है। उपयुक्त जाँच एवं प्रारंभिक पहचान से बधिरांध बच्चों को उचित देखभाल मिल सकती है एवं दोहरी संवेदी हानि के प्रभाव को कम किया जा सकता है।
* द स्पास्टिक्स सोसाइटी ऑफ़ तमिलनाडु (एसपीएएसटीएन), चेन्नई बधिरांधता के लिए क्षेत्रीय शिक्षण केंद्र है एवं तमिलनाडु, तेलंगाना, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश एवं पुडुचेरी में बधिरांधजनों के लिए सेवाओं का विस्तार कर रहा है। बधिरांधजनों तक सेवाएँ पहुँचाने का कार्य "अलगाव से समावेशन तक" परियोजना के अंतर्गत किया जा रहा है, जिसे सेंस इंटरनेशनल इंडिया द्वारा सहायता प्राप्त एवं अज़ीम प्रेमजी फिलोनथरोपिक इनिश्यटिव (एपीपीआई) द्वारा वित्त प्रदत किया गया है।
* जिसे सेंसे इंटरनेशनल इंडिया, जिसे सेंस इंडिया के नाम से भी जाना जाता है, १९९७ में भारत की पहली राष्ट्रीय गैर-सरकारी संस्था (एनजीओ) के रूप में स्थापित हुई, जिसका उद्देश्य बधिरांध जनों के लिए व्यापक सेवाओं एवं प्रशिक्षण का विकास करना है।
* सेंस इंडिया बधिरांध व्यक्तियों एवं उनके परिवारों के साथ सक्रिय रूप से काम कर रही है ताकि उनकी समग्र विकास में मदद की जा सके एवं उन्हें समाज का सक्रिय एवं योगदान देने वाला सदस्य बनाया जा सके। यह संगठन २३राज्यों में ५८ भागीदार संगठनों के माध्यम से ७७,००० से अधिक बधिरांध बच्चों एवं वयस्कों तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहायता प्रदान कर रहा है।
* विकलांगजन अधिकार अधिनियम, २०१६ (आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम, २०१६) भारत में विकलांग व्यक्तियों को समान अवसर देने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। यह अधिनियम भारतीय संविधान के अनुच्छेद२५३ एवं संघ सूची की प्रविष्टि संख्या१३के अंतर्गत लागू किया गया, जिसमें बधिरांधता सहित बहु-विकलांगता को दिव्यांगता के प्रकारों में शामिल किया गया है।
* सेंस इंटरनेशनल इंडिया **का बधिरांधता सहायता टोल-फ्री नंबर: १८००२३३७९१३**